निर्मल वर्मा की कहानी संग्रह 'परिन्दे' में आधुनिकता–बोध

डां. पूनम कुमारो
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्मल वर्मा आधुनिक कहानीकार के रूप में हिन्दी गद्य साहित्य में अपना उच्च स्थान बनाए हुए हैं। निर्मल वर्मा का हिन्दी साहित्य जगत में नयी कहानीकार के रुप में भी अपना अलग स्थान है। आधुनिक–युग बोध से सम्बन्धित रहने के कारण इनकी कहानियों का परिवेश भी आधुनिकता को लिए हुए है। परिन्दे' कहानी संग्रह की समस्त कहानियां सामाजिकता से ओत–प्रोत हैं। 'परिन्दे' संग्रह की प्रथम कहानी 'डायरी का खेल' है। इस कहानी की प्रमुख पात्र बिटटो है जो तपेदिक की मरीज है, वह छुट्टियाँ बिताने के लिए अपनी बुआ के पास आती है। जहाँ उसका परिचय बब्बू नामक लड़के से होता है। उनके आपसी वार्तालाप से ऐसा जान पड़ता है कि दोनों एक–दूसरे को चाहने लगे हैं। बब्बू को हर शाम बिट्टों के छत पर आने का इन्तजार रहता था। एक दिन बब्बू के पूछने पर कि चाची कहाँ है बिटटो बड़ उदास मन से उसे कहती है कि वह भौजाई के साथ मेरे लिए लड़का देखने गयी है। इस बात को वह अनमने भाव से कह देती है।

"चाची कहां है ?" वह कुछ देर तक चुप रही, फिर नितान्त विरक्त भाव से बाहर देखने लगी। "तुम्हारी भौजाई के संग मेरे लिए लड़का देखने गयी है।"[1] प्रस्तुत वक्तव्य से स्पष्ट ही ज्ञात हो जाता है कि बिटटो कितनी उदास व मजबूर है।

'परिन्दे' संग्रह की दूसरी कहानी 'माया का मर्म' है। जिसमें कहानीकार ने स्वयं को कहानी के प्रमुख पात्र के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित किया है। कहानी का पात्र सदैव कल्पनालोक में ही विचरण करता रहता है। अपनी बेरोजगारी का वह एक छोटी सी बालिका जिसका नाम 'लता माथुर' है के सामने बेझिझक वर्णन कर देता है। उसके पूछने पर कि, "आज सबकी छुट्टी है–तुम्हारी भी होगी ?" "छुट्टी? हां हमारी भी छुट्टी है, वैसे भी तो हर रोज छुट्टी ही रहती है।"[2]

यह सब कहने पर वह मन ही मन सोचता है, "मैंने पहली बार बेरोजगारी के इस लम्बे और उदास अर्से पर से दरिद्रता की राख को बिना दर्द के कुरेद दिया। जो अभाव की रिक्तता अब तक चुभती थी, वह अब भी है किन्तु जैसे वह अपनी न रहकर परायी बन गयी है जिसे मैं बाहर से तटस्थ भाव से देख सकता हूँ। अब 'छुट्टी' का सहज भाव अपना लिया है।"[3]

कहानी का प्रमुख पात्र बेरोजगारी की समस्या से इतना व्याकुल व असहाय बन जाता है कि वह अपनी इस समस्या व चिन्ता को वह एक छोटी उम्र की बच्ची के समक्ष ही निश्चल भाव से कह देता है और अपना बोझ हल्का कर कुछ समय के लिए स्वयं को इस समाज से दूर ले जाता है और कल्पनालोक में भ्रमण करता है।

निर्मल वर्मा ने 'तीसरा गवाह' कहानी में आधुनिक युग में होने वाले प्रेम की महत्वहीनता को व्यक्त किया है। मात्र एक गवाह के समय पर न पहुंचने पर उसका विवाह का सपना टूट

जाता है। वह इसके लिए अपने मित्र मास्टर साहब को ही जिम्मेदार मानता है और यह सोचकर बहत दुःखी होता है।

"मैंने चारों ओर नजर दौड़ायी, किन्तु मेरे शहर–निवासी हाई स्कूल के अध्यापक कहीं दिखाई नहीं दिये। जिसे तीसरे गवाह के रूप में उपस्थित होना था।"[4] समाज में प्रेम को इतनी महत्वहीन दृष्टि से देखा जाता है कि कहानीकार निर्मल वर्मा अपनी रचनाओं में इसका सशक्त वर्णन करने से कहानी में सफल रहते हैं।

"दरअसल जब कभी भी मैं किसी के मुंह से सच्चे व झूठे प्रेम के बारे में सुनता हूं तो मुझे बहुत हैरानी होती है। मैं समझता हूं कि प्रेम अगर ऐसी कोई चीज है तो बहुत महत्वहीन है उसका अन्त भी शायद बहुत ही छोटे और अर्थहन कारणों से ही होता है।"[5]

'तीसरा गवाह' कहानी में आधुनिकता बोध को निर्मल वर्मा ने बड़ी सरलता से चरितार्थ किया है। इस कहानी के पात्र आधुनिक युग में रहते हुए भी समाज की संकीर्णता से ग्रस्त हैं। कहानी का प्रमुख पात्र नीरजा से प्रेम करता है। लेकिन वह उससे विवाह नहीं कर पाता।

कहानी के आरम्भ में कथानायक नीरजा से मिलने का हर अवसर ढूंढता है लेकिन अपनी बात नहीं कह पाता।

"दरवाजा खटखटाने पर नीरजा बाहर आई। मुझे देखकर उसने धीमे स्वर में कहा, "मां सो रही है।" "अच्छा मैं फिर आऊँगा, मैं पीछे मुड़ गया, अपने कमरे में न जाकर छत की मुँडेर पर खड़ा हो गया।"[6]

कथानायक नीरजा से मिलने के लिए कितना व्याकुल है। वह उसकी माँ की तबीयत पूछने के बहाने उससे मिलना चाहता है। आधुनिक समाज में रहने के कारण दोनों एक–दूसरे से नहीं मिल पाते, उन्हें सदैव समाज की आलोचना का ही डर लगा रहता है। इन पंक्तियों से लेखक ने यह उजागर करने का प्रयास किया है कि प्रेम किन आकस्मिक और उसका अन्त कितने छोटे से अर्थहीन कारणों से हो जाता है।

निर्मल वर्मा की कहानी 'अन्धेरे मे' इसम पति–पत्नी के आपसी सम्बन्धों के टूटन को, और बिखराव को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। एक छत के नीचे रहने पर भी वे अजनबी की तरह जीते हैं। उनके आपसी टकराव और अलगाव का प्रभाव उनके बच्चे पर पड़ता है जो यह नहीं जान पाता कि उनके इस टकराव का आधार क्या ह।

"पोनो ... तुम भीतर नहीं जाओगी।"

"कौन हो तुम मुझे रोकने वाले–छिः शर्म नहीं आती ?"

"पोनो ..... वह सो रहा है ..... इस तरह मत चिल्लाओ।"

"मैं चिल्लाऊंगी नहीं, मुझे भीतर जाने दो।"

"नहीं ... इस वक्त नहीं।"

"तुम समझते हो, मैं पागल हूं .... उसे सब कुछ बता दूंगी।"[7]

पति–पत्नी दोनों के मध्य कुछ ऐसा है जिसका न तो बच्चे को ज्ञान है और न ही पाठक जाना पाता है। 'अन्धेरे में' कहानी में पोनो का बीरेन चाचा के साथ प्रेम सम्बन्ध है। बच्चा अपनी माँ का फोटो बीरेन चाचा की अलबम में देखता है।

"सहसा मुझे आभास हुआ कि इस चेहरे में कुछ ऐसा है, जिसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है, बाबू से कोई सम्बन्ध नहीं।"[8] बच्चे के इन वक्तव्यों से स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि उसकी मां का फोटो तथा बीरेन चाचा के बीच अवश्य ही कुछ गहरा सम्बन्ध है।

"सितम्बर की एक शाम" कहानी एक ऐसे युवक की कहानी है जो बेरोजगारी की छटपटाहट में घुटता हुआ जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर है। निर्मल वर्मा ने कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त बेरोजगारी के माध्यम से उत्पन्न मानसिक कुण्ठा व संत्रास को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है।

कहानी में कथानायक अपनी बेरोजगारो से इतना ऊब चुका है कि उसे घर से दूर किसी अनजान शहर में जाना पड़ता है जहां उसे अचानक अपने पिता की ही बातें याद हो आती हैं। "उसे लगा कि यह चेहरा उसके पिता की तीखी, व्यंग्यात्मक मुद्रा में मुस्करा रहा है – घर से जाओगे, अपने पाँव पर खड़े होने जाओ। अपनी स्वतन्त्रता की पोटली बांधकर कहां–कहां भटकते फिरोगे – जब नशा उतर जाए तो वापिस लौट आना।"[9]

'सितम्बर की एक शाम' कहानी में कथानायक की बहन के इन शब्दों से यह बात स्पष्ट होती है कि उसका अपने परिवार और समाज में रहना कितना दूभर हो गया है।

"अगर घर छोड़कर भागना था, तो इस शहर में क्यों आये, माँ की चिट्ठियां आती हैं ? तुम्हारे जीजा जी परेशान होते हैं, मुझे कोसते हैं। बताओ मैं क्या करूं ? जब तक यहां इस शहर में रहोगे, मुझे छुटकारा नहीं मिलेगा।"[10] इस व्यक्तव्य से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कथानायक घर छोड़कर तो आ जाता है लेकिन उसके आने पर उसकी बहन को कितनी बातें सुननी पड़ती हैं इस वर्णन स्पष्ट हो जाता है। कथानायक की बहन एक ऐसे समाज में रहती है जहां उसे सामाजिक नियमों का पालन करते हुए जीवन बिताना है।

'पिक्चर पोस्टकार्ड' कहानी में शैक्षणिक चेतना के स्पष्ट दर्शन होते हैं। पूरी कहानी शिक्षा पर आधारित है। कहानी के सभी पात्र उच्च शिक्षित हैं। शिक्षित होने के कारण उनकी विचारधारा भी स्वच्छंद है। सभी पात्र आधुनिक युग बोध में जीवन व्यतीत करते हैं। जिस कारण उनकी सोच भी आधुनिक व स्वच्छन्द बन जाती है।

"निकी का अफेयर कैसा चल रहा है।"

सीडी ने पूछा।

"मैने उससे पूछा नहीं।"

"आज यूनिवर्सिटी शायद उसी से मिलने गया है।"

"उसने मुझे कुछ कहा नहीं। शायद उसी से मिलने गया हो।[11]

इस वक्तव्यों से पात्र की स्वच्छन्द प्रवृत्ति का पता चलता है। सभी पात्र उच्च शिक्षित हैं और आधनिक युगीन समाज में स्वच्छन्द विचारधारा लिये अपना जीवन जीते हैं।

निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' कहानी संग्रह की कहानी 'परिन्दे' में मनुष्य की तुलना परिन्दे से की गई है। अर्थात् मनुष्य परिन्दों की भांति इधर–उधर भटकता रहता है। उसका एक ठिकाना नहीं बन पाता है। परिन्दे कहानी में छुट्टियाँ हो जाने पर होस्टल की लड़कियों का घर जाने का वर्णन है और उससे पहले होस्टल में उनकी क्या गतिविधियाँ होती हैं उनका सूक्ष्मता से वर्णन किया है। निर्मल वर्मा कहानी में पात्रों की मानसिकता घटनाओं आदि को चित्रित करने में कोई कमी नहीं छोड़ते। 'परिन्दे' कहानी के सभी पात्र घुटन, संत्रास, पीड़ा और एकांकीपन का जीवन जीते हैं। निर्मल वर्मा ने अपनी सामाजिक चेतना के आधार पर इसका सूक्ष्मता व गहनता से अध्ययन किया है और कहानी को सफल बनाया है। पात्रों के आपसी वार्तालाप और लेखक द्वारा उनकी मनः स्थितियों को वर्णन करने से उनके एकाकीपन, घुटन, संत्रास, पीड़ा और कुंठा का स्पष्ट बोध होता है। "बातों के दौरान डॉक्टर अक्सर कहा करते हैं – मरने से पहले मैं एक दफा बर्मा जरूर जाऊंगा और तब एक क्षण के लिए उनकी आँखों में एक नमी सी छा जाती है।"[12]

इस वक्तव्य से यह बात स्पष्ट होती है कि कहानी का पात्र जिस समाज में रहता है। वह साधन सम्पन्न जीवन जीता है, लेकिन फिर भी कहीं न कहीं उसे अपने देश की कमी खलती रहती है। डॉक्टर अक्सर अपने मित्रों से कहता है कि मरने से पहले मैं एक बार बर्मा जरूर जाऊंगा। यह कहकर एक क्षण के लिए मानों उसको आँखों में नमी सी छा गई हो। निर्मल वर्मा ने इस कहानी में पात्रों के माध्यम से अपने देश व समाज के प्रति प्रेम को बड़ी बारीकी से उजागर किया है। 'परिन्दे' कहानी के सभी पात्र कहीं न कहीं अपने देश और समाज के प्रति जागरुक चेतना को लिए दर्शाये गए हैं। उन्हें अपनो जन्मभूमि से लगाव है और अतीत की कोई घटना अभी भी उनके मानस–पटल पर छाई रहती है।

'परिन्दे' कहानी में स्कूल और हॉस्टल बन्द होने पर लड़कियों की घर वापसी का वर्णन है। उनकी तुलना परिन्दों से की गई है, जो सर्दियों में मैदानों में चले जाते हैं। लतिका, डॉक्टर, मि0 ह्युबर्ट आदि कहानी के सभी पात्र घुटन भरा जीवन जीते हैं। लतिका छुट्टियों में भी कहीं नहीं जाती है। वह छुट्टियाँ भी होस्टल में ही बिताती है। निर्मल वर्मा ने इस कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त एकाकीपन, घुटन, कुंठा और संत्रास को व्यक्त किया है। वहीं दूसरी ओर समाज में रहने वाले ऐसे लोगों पर भी कड़ा व्यंग्य किया है जो दूसरों पर पाबन्दी लगाकर स्वयं उन्मुक्त रहते हैं।

"पता नहीं, मिस वुड को स्पेशल सर्विस का गोरखधंधा क्यों पसन्द है। छुट्टियों में घर जाने से पहले क्या यह जरूरी है कि लड़कियां फादर एल्मण्ड का सर्मन सुने ?"[13]

मिस वुड ने जो स्कूल की प्रिंसिपल है ने लड़कियों पर कड़ी पाबन्दी लगा रखी है। उनका जीवन पिंजरे में बन्द उस परिन्दे जैसा है जो न कुछ कर सकता है और न ही अपनी इच्छा से स्वतन्त्र हो सकता है। इस कहानी में भी मिस वुड ने लड़कियों को छुटिटयों में घर जाने से पहले फादर एल्मण्ड का का सर्मन सुनना और स्पेशल सर्विस जैसे नियम बना रखे हैं जिनका पालन करना ही पड़ता है।

"हजारों मील अपने मुल्क से दूर मैं यहाँ पड़ा हूँ – यहाँ कौन मुझे जानता है .... यहीं शायद मर भी जाऊँगा।[14]

इस वक्तव्य से स्पष्ट हो जाता है कि कहानी का पात्र अपने देश को छोड़कर प्रसन्न नहीं है उसे हमेशा इस बात की शिकायत रहती है कि अपने मुल्क से यहां मेरा अपना कोई नहीं है और मरने पर भी मुझे देखने वाला कोई नहीं होगा। निर्मल वर्मा ने आज के इस आधुनिक युग में भी समाज के प्रति अपनी जागरूक दष्टि रखकर उसमें व्याप्त समस्त कुरीतियों को हमारे समक्ष उजागर किया है। उनकी कहानी के सभी पात्र समाज में रहते हुए भी घुटन, व एकाकीपन को लिए जीवन व्यतीत करते हैं।

निर्मल वर्मा ने परिन्दे कहानी में कहानी की प्रमुख पात्र लतिका को गिरीश नेगी नामक एक मेजर के प्रति आकर्षित होते दिखाया है। समाज में प्रेम–सम्बन्धों को कितना महत्व दिया गया है। यह इनकी कहानी से स्पष्ट ही प्रतीत होता है। समाज में ही मनुष्य प्रेम के प्रति जागरूक होता है और इसी समाज में प्रेम सम्बन्धों को गलत नजर से भी देखा जाता है। जिसका चित्रण निर्मल वर्मा न 'परिन्दे' कहानी में किया है।

"मिस वुड, पता नहीं आप क्या सोचती हैं। मुझे तो लतिका का होस्टल में अकेले रहना कुछ समझ में नहीं आता। आप तो जानती हैं उस मिलिट्रि अफसर को लेकर एक अच्छा–खासा सकैंडल बन गया था।[15] अतः समाज में लड़कियों का अकेले रहना और किसी अनजान पुरुष से बात करना कितना गलत माना जाता है लतिका जो शिक्षित है फिर भी उसे संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। फादर एल्मण्ड तो मिलिट्रि अफसर की बात को लेकर अपने स्कूल की बदनामी होने के डर से लतिका को अकेले हॉस्टल में नहीं रहने देना चाहते हैं। उन्हें लतिका पर ही नहीं, हॉस्टल की सभी लड़कियों पर विश्वास नहीं होता कि वे कब क्या कर बैठें और स्कूल की बदनामी हो जाए।

लतिका गिरीश नेगी नामक एक मेजर से प्रेम करती है परन्तु ज बवह जूली के लिए आए पत्र पर भी आर्मी का पता देखती है, तो उसकी अपनी स्मृतियों ताजा हो उठती हैं। लतिका को उस समय शायद जूली से ईर्ष्या हो जाती है। जिसका लेखक ने बड़ी सहजता से वर्णन किया है ।

"कौन है यह ..." लतिका ने पूछा। उसने पहले भी होस्टल में उड़ती हुई अफवाह सुनी थी कि जूली को क्लब में किसी मिलिट्रि अफसर के संग देखा गया था।"[16] कहानी की पात्रा जूली के प्रेम प्रसंग को लेकर ईर्ष्या करती है कि उसका अपना प्रेम सफल न हो सका था। इसलिए जूली को जब कुमाऊं रेजिमेन्ट सेन्टर की मोहर वाला पत्र आता है तो वह उसे तीखे स्वर में डांट देती है। लतिका समाज में रहने के कारण ही इस तरह का व्यवहार करती है। क्योंकि समाज में उसके साथ भी शायद ऐसा ही व्यवहार किया था और तब उसने भी अपने प्रेम सम्बन्ध को लेकर फादर एल्मण्ड को लेकर मिस वुड से कितनी ही बार डाँट–फटकार सुनी थी।

निर्मल वर्मा ने कहानी की शुरूआत लतिका से ही की है। वास्तव में लतिका ही कहानी की प्रमुख पात्र है। पूरी कहानी उसके इर्द–गिर्द घूमती है।

"हर साल सर्दी की छुट्टियों से पहले ये परिन्दे मैदानों की ओर उड़ते हैं और कुछ दिनों के लिए बीच के इस पहाड़ी स्टेशन पर बसेर करते हैं, प्रतीक्षा करते हैं कि कब बर्फ पड़े और वे नीचे अजनबी, अनजाने शहर में उड़ जायेंगे ..... ।"[17]

इन पंक्तियों में हॉस्टल में रहने वाली लड़कियों का जिक्र किया गया है। जो सर्दियों की छुट्टियों में अपने–अपने घरों को चली जाती हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार लतिका और डॉक्टर पक्षियों के एक बेड़े को धूमिल आकाश में उड़ते हुए देखते हैं। दूसरी तरफ कहानी के सभी पात्र 'परिन्दे' के समान हैं। वे कहीं आते–जाते नहीं हैं, यह उनकी मजबूरी है, जैसे लतिका छुट्टियों में कहीं नहीं जाती है, हॉस्टल में ही रहती है, वह पिंजरे में बन्द पक्षी के समान जीवन जीती है। डॉक्टर जो कि वर्मा का निवासी है, उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। मि0 ह्युबर्ट छाती के दर्द से पक्षी जैसा छटपटा रहा है।

अन्त में निर्मल वर्मा ने लतिका के जूली के प्रति ईर्ष्या भाव को भी दूर कर दिया है। लतिका को जब अपनी पुरानी स्मृतियां याद हो आती हैं तो वह जूली से अपने व्यवहार पर माफी माँगना चाहती है। लतिका जूली के कमरे में रोशन देखकर दरवाजा खोलकर अन्दर चली जाती है।

"लतिका धीरे–धीरे दबे पाँव से जूली के पलंग के पास चली आयी। जूली का सोता हुआ चेहरा लैम्प के फीके आलोक में दिख रहा था। लतिका ने अपनी जेब से वह नीला लिफाफा निकाला और धीरे से जूली के तकिये के नीचे दबा कर रख दिया।"[18]

अन्त में जब लतिका को अपने किये पर पश्चाताप होता है तो वह जूली का पत्र उसे लौटाने चली जाती है। जूली को सोता हुआ देखकर लतिका ने अपनी जेब से वह नीला लिफाफा निकाला और धीरे से जूली के तकिये के नीचे दबा कर रख दिया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लतिका के दिल में जूली के प्रति अब प्रेम व दया भाव उभर आया है।

निष्कर्षतः निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' कहानी संग्रह की सभी कहानियां आधुनिकता से ओत प्रोत रही हैं। कहानियों के अधिकांश पात्र आधुनिक परिवेश में रहने के कारण आधुनिक विचारधारा को लिये प्रस्तुत होते हैं। 'परिन्दे' संग्रह की सभी कहानियों में आधुनिक समाज में घटित होने वाली घटनाएँ उजागर हुई हैं। कहानियों में कहीं सामाजिक विसंगतियां हैं तो कहीं आर्थिक व्यवस्था में बिगड़ती परिवार की स्थिति। कहीं पर पति–पत्नी के मध्य किसी तीसरे के आ जाने से उत्पन्न अलगाव है तो कहीं बेरोजगारी की छटपटाहट से पीड़ित व्यक्ति की मानसिकता को उभारा गया है। अतः ये कह सकते हैं कि निर्मल वर्मा स्वयं एक उच्च कोटि के आधुनिक कहानीकार हैं, इन्होंने अपनी सभी कहानियों में आधुनिकता बोध को स्पष्टतया उजागर किया है।

संदर्भ

1. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 19
2. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 36
3. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 37
4. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 58
5. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 42

6. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 47
7. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 80
8. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 73
9. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 113
10. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 116
11. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 95
12. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 124
13. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 125
14. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 128
15. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 138
16. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 148
17. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 153
18. निर्मल वर्मा 'परिन्दे' (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1984) पृ0 152

Pratibha Spandan